अपना अक्श दर-बदर ढूँढता रहा, ऐ रहगुज़र..,
कभी पास तो कभी दुरंदेज़ ही दिखा,
हमेशा चिरागाँ की लौ ने छिपाया हमें,
जो हम छिपे तो, जुस्तज़ू की रोशनी में..!

बदन-करीब ही छुआ ऐ सितमगर..,
नज़रों ने ही इश्तकबाल किया,
ग़ौर फ़रमाया तो, नोश की रहनुमाई,
जुनूँ की हद तक पेशानियों की तह आयी..!